THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING AND WORKS, HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT (SHRI B. S. MURTHY) : The Municipal Corporation of Delhi had intimated in their letter of of 15th November, 1968 that no suits had been filed by the Municipal Corporation for the offence of forcible occupation of public land against people who have either died years ago or who do not exist at all. It was on the basis of this information that the following replies were given to Unstarred Question No. 1040 in the Lok Sabha asked by Shri Bibhuti Mishra on the 18th November, 1968 :—

(a) No.

(b) and (c). The questions do not arise.

2. It was subsequently intimated by the Municipal Corporation that two cases were instituted against M/s Ramji Lal Ram Sarup through Shri Ramji Lal under section 321 of the D. M. C. Act (Encroachment on public land without permission) and that it was later on revealed that Shri Ramji lal had died long ago. The Corporation also informed that the expenditure on such cases was quite negligible hardly exceeding Rs. 10/- per case and that the concerned Inspector had since been suspended.

In view of the position explained above the following replies may kindly be substituted in place of those already given :—

(a) whether it is a fact that authorities of the Delhi Municipal Corporation have filed suits for the offence of forcibly occupation of public land against those people who have either died years ago or who do not exist at all ;

(b) if so, the financial loss Government suffered as a result of such cases ; and

(c) the action Government have taken against the officers responsible for this ?

(a) Yes, in two cases which were instituted against a firm represented through one and the same person.

(b) The expenditure incurred by the D. M. C. was negligible and hardly exceeded Rs. 10/- per case.

(c) The concerned Inspector was suspended by the D. M. C.

12 hrs.

CALLING ATTENTION TO MATTER OF URGENT PUBLIC IMPORTANCE

Withdrawal of Indian Military Mission and Indian Wireless Operators from Nepal

श्री बलराज मधोक (दक्षिण दिल्ली) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं अविलम्बनीय लोक महत्व के निम्नलिखित विषय की ओर वैदेशिक-कार्य मंत्री का ध्यान दिलाता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह इस बारे में एक वक्तव्य दें :—

'वैदेशिक-कार्य मंत्री के नेपाल के दौरे के पश्चात नेपाल के प्रधान मंत्री द्वारा की गई यह मांग की कि भारतीय सैनिक मिशन और भारतीय वायरलेस आपरेटरों को नैपाल से वापस बुला लिया जाय ।'

THE MINISTER OF EXTERNAL AFFAIRS (SHIR DINESH SINGH) : Mr. Deputy-Speaker, sir, The Nepalese authorities have been suggesting for some time that we should change the status of the Indian Military Liaison Group in Nepal which was sent for a specific purpose and gradually withdraw Indian personnel from their border checkposts as more and more Nepalese trained personnel become available to take on the work assigned to them. These matters were again discussed during the visit of Nepalese Foreign Minister to Delhi in May, 1969 and during my visit to Nepal in the first week of June, 1969.

we have informed the Nepalese authorities that we have no objection in principle to acceding to their request in this regard. However, these arrangements were made in cooperation because of the very closed relations that exist between Nepal and India. In view of our open border and free movement of people and goods, we have to see how this cooperation can be further strengthened in our mutual interest.

[SHRI DINESH SINGH]

It was agreed that experts from two sides will meet and discuss these matters in depth. We are ready to receive Nepalese officials and are awaiting information from the Nepalese Government.

A copy of the joint communique issued at the conclusion of my visit to Nepal is placed on the Table of the House. [*Placed in library. See No, Lt-1279/69.*]

श्री बलराज मधोक : उपाध्यक्ष महोदय, नेपाल और भारत ये ऐसे दो देश हैं जो दो होते हुए भी मानो एक हैं। दोनों के माथे पर हिमालय है और शिव, जो हिमालय की चोटियों पर खेलते हैं, दोनों के देवता हैं और हमारे धार्मिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध सदियों से नेपाल के साथ चले आ रहे हैं। और राजनीतिक सम्बन्ध भी बहुत अच्छे रहे हैं। परन्तु दुर्भाग्य से जब से देश स्वतंत्र हुआ है हमारी सरकार की गलत नीति, गलत विदेश नीति, जिस विदेश नीति ने हमें दुनिया के अन्दर बदनाम किया है, हमारा सारा स्थान नीचे गिराया है, उसके कारण हमारे जो निकटतम पड़ोसी हैं उनके साथ भी हमारे सम्बन्ध अच्छे नहीं बन पाये हैं।

नेपाल के उत्तर में भी तिब्बत है। नेपाल के साथ उसके विशेष सम्बन्ध थे, जैसे हमारे विशेष सम्बन्ध थे। आप तो मरे, जिजमानों को भी ले डबे। हमने तिब्बत से अपनी फ़ौजें निकाल लीं और फिर हमने नेपाल को भी मजबूर किया कि उसके जो वह एक्स्ट्रा टैरीटोरियल राइट्स थे, जो उसकी सेना ल्हासा में थी तथा अन्य स्थानों में थी, उसको भी वह वहां से निकाल ले। आज नेपाल की स्थिति यह है कि उसके एक ओर चीन है और एक ओर भारत है। नेपाल एक छोटा-सा देश है और स्वाभाविक रूप में एक छोटी-सी बफ़र स्टेट के रूप में नेपाल को विचार करना है कि क्या भारत, जिसके साथ उसके गहरे सम्बन्ध हैं, घनिष्ट सम्बन्ध हैं, उसकी रक्षा कर सकता है।

दुर्भाग्य है कि हम अपनी कृतियों से जिस ढंग से इस देश के अन्दर और बाहर काम करते हैं उससे हमने अपने देश के पड़ौसियों के मनमें यह विश्वास नहीं छोड़ा कि हम उनके सहायक हो सकते हैं, हम उनकी रक्षा कर सकते हैं। हम अपनी रक्षा तो कर नहीं सकते औरों की क्या करेंगे। यह बुनियादी कारण है भारत और नेपाल के सम्बन्धों के बिगड़ने का।

फिर भारत और नेपाल के सम्बन्धों का मूल आधार सांस्कृतिक और धार्मिक सम्बन्ध हैं जो कि वास्तव में भारत और नेपाल को जोड़ने वाली एक कड़ी है। परन्तु हमें अपने धर्म और संस्कृति का नाम लेने में शर्म आती है। मुझे बहुत से नेपाली कूटनीतिज्ञों ने बताया कि भारत सरकार के लोग हमें इसलिये कंडेम करते हैं कि हमने अपने आपको एक हिन्दू राज्य डिक्लेयर कर रखा है, जैसे हमने कोई बड़ा पाप किया है। हमारी सरकार के लोग दो-दो कौड़ी और लगभग 10 लाख की आबादी वाले अरब राज्यों के जो डिप्लोमेट्स हैं, उनके जो राजा हैं, उनको जो स्थान देते हैं उसये बहुत कम महत्व नेपाल को देते हैं। यह हमारा दुर्व्यवहार है। इसलिये मैं कहना चाहता हूं कि नेपाल के साथ हमारे सम्बन्ध केवल टेक्नीकल आधार पर नहीं, केवल संधियों के आधार पर नहीं हैं। हमें इमोशनल आधार पर नेपाल के साथ अपने सम्बन्धों को सुधारना होगा। जब तक हम नेपाल के साथ धार्मिक और सांस्कृतिक सम्बन्ध नहीं बढ़ायेंगे तब तक नेपाल हमसे दूर जायेगा, और उसका दूर जाना न केवल नेपाल के हित में नहीं है बल्कि भारत के हित में भी नहीं है। इस पृष्ठभूमि में मैं कुछ प्रश्न पूछना चाहता हूं और मैं आशा करता करता हूं कि मंत्री महोदय उनका जवाब देंगे।

पहला मेरा प्रश्न यह है कि क्या यह सत्य है कि वहां हमारे जो वायरलैस औपरेटर्स और मिलिटरी लायजां ग्रुप है, इसका 1950 की संधि के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, यह एक ऐडहाक अरेन्जमेंट था, नेपाल सरकार ने अपने कुछ काम के लिये, ट्रेनिंग के लिये, अपनी जुडिशियल सर्विस को रीआर्गेनाइज़ करने के लिये, अपनी

पुलिस, मिलिटरी को रीआर्गेनाइज करने के हमसे कुछ आपरेटर मांगे थे, जो हमने दिये थे, उनके पास वायरलैस औपरेटर नहीं थे, उन्होंने किसी खास काम के लिए मांगे थे। इनका वहां जाना या वापस आना इनका, भारत के जो मूल सम्बन्ध हैं नेपाल के साथ, भारत नेपाल की जो 1950 की संधि है, उससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

दूसरे, क्या यह सत्य है कि नेपाल सरकार ने इनको वापस बुलाने की चर्चा हमारे राष्ट्रपति के साथ, स्वर्गीय राष्ट्रपति के साथ, प्रधान मंत्री के साथ, जब यह वहां गयी थीं, की थी ? और यदि पहले कई दिनों से वह यह बात कर रहे हैं तो भारत सरकार को इस बात को मानने या कोई उन्हें तसल्लीबख्श जवाब देने में क्या कठिनाई रही है ?

तीसरे, क्या यह सत्य है कि आज नेपाल और भारत के जो सम्बन्ध ट्रेडीशनल चले आ रहे थे उनमें कई प्रकार की कठिनाइयां पैदा हो रही हैं, कई पिन प्रिक्स नेपाल वाले महसूस कर रहे हैं और हम भी महसूस कर रहे हैं, तराई के इलाके में गड़बड़ियां हो रही हैं, वहां पर तस्कर व्यापार हो रहा है, इन हालात में क्या भारत सरकार नेपाल और भारत के सम्बन्धों, नेपाल को एक सौवरेन स्टेट मानते हुए बाइलेटरल आधार पर सारे सम्बन्धों पर पुनर्विचार करने के लिये नेपाल सरकार से कुछ बातचीत करेगी?

चौथी बात यह है कि क्या यह तथ्य है कि नेपाल के महत्व को देखते हुए, चीन और पाकिस्तान विशेष रूप में...

SHRI S.K. TAPURIAH (Pali): Sir, there should be some order on the Treasury Benches. What is going on there ?

SHRI BALRAJ MADHOK: May I know if it is the acting Foreign Minister who is standing there ? We have an acting President, an acting Speaker and the acting Foreign Minister is going there.

MR. DEPUTY-SPEAKER: Please conclude your question.

श्री बलराज मधोक : चीन और पाकिस्तान विशेष रूप में नेपाल के अन्दर अपने बड़े कुशल राजनीतिज्ञ भेज रहे हैं और वहां पर अपना प्रभाव गढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। उसके मुकाबले में हमने समझा है कि नेपाल हमारे घर का है, इसलिये किसी विशेष राजनीतिज्ञ को वहां भेजने पर ध्यान नहीं देते। इसलिये क्या सरकार इस बात पर विचार करेगी कि वहां अपने एबलेस्ट राजनीतिज्ञों को भेजा जाये ताकि नेपाल के बारे में भी हम ठीक प्रकार से जानकारी प्राप्त कर सकें और अपने सम्बन्ध सुधार सकें ?

श्री दिनेश सिंह : मैं माननीय सदस्य से सहमत हूं कि नेपाल से हमारे बड़े घनिष्ट सम्बन्ध हैं। सदियों से ये सम्बन्ध चले आ रहे हैं। सांस्कृतिक सम्बन्ध हैं, धार्मिक सम्बन्ध हैं, राजनीतिक सम्बन्ध है, बहुत से सम्बन्धों का मेल है नेपाल से हमारा। और विशेष सम्बन्ध हैं हमारे और नेपाल के बीच में...

श्री सुरेन्द्रनाथ द्विवेदी (केन्द्रपाड़ा) : सम्बन्धी कोई नहीं है। सम्बन्ध हैं।

श्री दिनेश सिंह : माननीय सदस्य ने पहला सवाल पूछा कि 1950 की संधि से इसका क्या सम्बन्ध है ?

1950 की संधि जैसा कि माननीय सदस्य जानते हैं वह एक मैत्री और एक शांति की संधि थी। उससे इनका कोई सीधा सम्बन्ध नहीं है। उस संधि के नीचे यह नहीं भेजे गए हैं लेकिन वह तो मैत्री और शांति का सम्बन्ध है और उसके नीचे बहुत-से काम हमारे दोनों देशों के बीच में हो रहे हैं।

दूसरी बात आपने पूछी कि उनकी बात मानने में क्या कठिनाई है ? इसका पहले मैंने जवाब दे दिया कि कोई कठिनाई नहीं है।

तीसरी बात यह पूछी कि हमारे सम्बन्धों और नेपाल के सम्बन्धों में क्या दिक्कतें हैं और हम उसको क्यों नहीं एक सत्तापूर्ण देश मानते हैं ?

[श्री दिनेशसिंह]

अब माननीय सदस्य जानते हैं कि नेपाल एक सत्तापूर्ण देश है और हम उसको शुरू से ही जब से हम आज़ाद हुए उसको एक आज़ाद देश मानते आये हैं और उसी तरीके से हमारे और नेपाल के बीच में सम्बन्ध बने हुए हैं। मैं नहीं चाहता हूं कि माननीय सदस्य कोई ऐसी गलतफहमी रक्खें कि नेपाल के और हमारे जो सम्बन्ध हैं उनमें हम कोई फर्क करना चाहते हैं। नेपाल भी एक सत्तापूर्ण देश है और यह कि हमारे और उनके सम्बन्ध काफ़ी घनिष्ट हैं लेकिन घनिष्ट होने से यह मतलब नहीं कि उनका देश या हमारा देश सावरन नहीं है। बहुत से सावरन देशों के बीच में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध होता है... (**व्यवधान**)

SHRI M. L. SONDHI (New Delhi): All discredited, disgruntled, politicians are dumped in Nepal. It is a fiasco.

श्री दिनेश सिंह: कठिनाई यह है कि उनके नेता ने कुछ सवाल पूछे थे और मैं उनका जवाब देने की कोशिश कर रहा हूं और यह साहब इस तरह से बीच में उठ कर बोलना शुरू कर देते हैं। तरह-तरह की बातें करते हैं जोकि इस तरह से समझ में नहीं आती हैं। पहले तय कर लें कि उन्हें क्या-क्या पूछना है और फिर अगर वह कायदे से सवाल पूछें तो मैं उन्हें जवाब देने की कोशिश करूंगा।

मैं अर्ज कर रहा था कि हमारा जो सम्बन्ध है वह इस आधार पर है कि दोनों देश आज़ाद हैं, सावरन हैं और दोनों देश आपस में मैत्री रखना चाहते हैं। दोनों देनों के बीच में बहुत-से ऐसे मामले है जिससे वह एक दूसरे के नज़दीक होते हैं।

माननीय सदस्य ने यह भी पूछा कि चीन और पाकिस्तान के लोग वहां घुसपैठ करने की कोशिश कर रहे हैं। अब चीन और पाकिस्तान के लोग क्या घुसपैठ कर रहे हैं यह तो नेपाल सरकार को देखना है अलबत्ता हमारी यह कोशिश जरूर रहती है कि ज्यादा-से-ज्यादा मैत्री जनता के साथ, सरकार के साथ और वहां के जो बादशाह हैं उनके साथ बनायें। हम लगातार उसी कोशिश में रहते हैं। इसलिए नेपाल के बारे में हमें जानकारी नहीं है ऐसी बात नहीं है हमें पूरी जानकारी है।

SHRI S. K. TAPURIAH: Diplomacy, silence and discretion appear to be foreign to the Foreign Minister. Unwanted fanfare was sought to be created during his recent visit to Nepal. Both radio and press went on glorifying his visit. One newspaper went to describe it that the bulletins issued by the Department sought to create an impression: Dinesh came, Dinesh saw and Dinesh conquered. I think, the hon. Minister agrees or believes with the author Oscar Wilde who wrote: Nothing succeeds like excess. That is why he indulged in excess publicity.

My question would be in two parts. Firstly, since the Nepalese demand came so close on the heels of his visit, may I know what did he do there which created this situation that they made this demand immediately following his visit? Secondly, what repurcussions this withdrawal, if we agree to it, will have on surveillance of Chinese movements and activities in that part of the country?

SHRI DINESH SINGH: The hon. Member did his best through the newspaper that he controls to give an impression that it was a total failure...

SHRI S. K. TAPURIAH: I do not control any newspaper. I subscribe to them all including your cronies *Patriot* and *National Herald*.

SHRI DINESH SINGH: Whatever he or his friends might try to print or misprint cannot obliterate the facts as have happened.

So far as the second part, the only relevant part, of the question that he tried to put is concerned, I would reply. The hon. Member said that this demand came up on the heels. I do not know where the heel comes into this picture. Quite sometime back this was discussed when their Foreign Minister came here on an earlier occasion. It is a question that is being discussed. As to what is the result of the discussion, it has

been incorporated in the joint Communique that these points would be examined in depth by the experts on both sides.

SHRI BAL RAJ MADHOK: He has not answered to this question, namely, if the withdrawal is agreed to, what effect it will have on the surveillance of Chinese movements and activities and our defence.

SHRI DINESH SINGH: Our personnel are there to assist the Nepalese team on the border. They do not carry out any surveillance for us.

श्री कंवरलाल गुप्त (दिल्ली सदर) : भारत के सम्बन्ध नेपाल के साथ बहुत अच्छे होने चाहिएं इसमें कोई दो राय नहीं हैं लेकिन जिस तरह के सम्बन्ध होने चाहिएं गहरे और निकट के उस तरह के सम्बन्ध नहीं हैं जो कि एक दुर्भाग्य की बात है। नेपाल के प्रधान मंत्री द्वारा की गई यह मांग कि भारतीय सैनिक मिशन और भारतीय वायरलैस आपरेटरों को नेपाल से वापिस बुला लिया जाय यह मांग जब भारत के वैदेशिक-कार्य मंत्री नेपाल के दौरे से लौटे उसके बाद यह मांग आई और वह भी किसी समाचारपत्र में छप गई जोकि एक बहुत अच्छी चीज़ नहीं है। अगर वह मांग एक डिप्लोमैटिक लेविल से आती तो ज्यादा अच्छा होता। इसका मतलब यह है कि विज़िट का जो असर होना चाहिए वह अच्छा होने के बजाय बहुत ग़लत असर हुआ है। आज सम्बन्ध बिगड़ते जा रहे हैं। यह जितने अच्छे होने चाहिएं उतने अच्छे नहीं हैं। उसका एक कारण यह है कि हमारी सरकार ने इस इश्यु को जिस तरीके से हैंडिल करना चाहिए वैसा नहीं किया मिस्हैंडिलिंग की है। दूसरे विदेशों की कुछ ऐसी ताक़तें हैं जोकि इसमें गड़बड़ पैदा करना चाहती हैं। मैं माननीय मंत्री से तीन, चार सवाल पूछना चाहता हूं। मेरे सवाल के तीन हिस्से हैं। पहले तो यह कि मंत्री महोदय यहां जब वापिस लौटे और उनका जब स्वागत किया गया तो उन्होंने यह कहा जोकि 11 जून को छपा है :

"The External Affairs Minister, Mr. Dinesh Singh, said in New Delhi on Tuesday that India and Nepal had withstood many powerful pressures from abroad to divide the two countries."

मैं पूछना चाहता हूं कि ऐसे कौन से पावरफुल कंट्रीज़ हैं जोकि डिवाइड करना चाहते हैं और उन्होंने क्या-क्या प्रैशर डाला है ?

सवाल का दूसरा हिस्सा यह है कि क्या यह सही है कि आज चीन भी यह कोशिश कर रहा है कि गोरखों को अपनी फौज में ले लें और अगर यह बात सही है तो उसके बारे में सरकार की क्या प्रतिक्रिया है ?

सवाल का तीसरा हिस्सा यह है कि बंगलिंग करते हैं। इसका एक उदाहरण मैं बतलाता हूं। जब मंत्री महोदय वहां गये तो यू० एन० आई० के रिपोर्टर ने उनसे पूछा, एक रिपोर्ट दिखाई और उसमें कहा कि देखिये चीन ने यह कहा है कि हम नेपाल को कुचल देंगे। उसके ऊपर उन्होंने एक अपनी प्रतिक्रिया बतलाई कि अगर चीन ने नेपाल पर हमला किया तो भारत उसकी पूरी तरह से मदद करेगा। वह रिलीज़ नहीं हो पाई क्योंकि कम्युनिकेशन का रास्ता खराब था। बाद में यह पता चला कि यू० एन० आई० के रिपोर्टर ने जो उनके सामने खबर दी थी वह आज की नहीं बल्कि सन् 1967 की थी जिस पर कि उन्होंने अपना कमैंट दिया था। एक्सटरनल एफेयर्स के जो मंत्री जी हैं उनको कम से कम अपना कमैंट देने से पहले यह देखना चाहिए कि वह खबर आज की है अथवा दो साल पुरानी है। क्या यह बात सही है और अगर सही है तो मंत्री महोदय कम से कम यह तो देख लिया करें कि खबर कौन-सी है ?

आखिरी मेरा सवाल यह है कि क्या यह सही है कि महाराजा से जब आप मिलने गये तो आपने उनसे त्रिएटनाम, वैस्ट एशिया आदि डिस्कस किया और उन्होंने आप से कोई ज्यादा इस बारे में बातचीत करना पसन्द नहीं किया और उन्होंने यह कह दिया कि आप मेरे फारेन मिनिस्टर से बात करिये, यह बात अखबारों में

[श्री कँवरलाल गुप्त]

आई थी तो इसके बारे में विदेश मंत्री को क्या कहना है ?

श्री दिनेश सिंह : मैंने देखा है कि कुछ अखबारों में शायद ऐसी बात छपवाने की कोशिश की गई है जिसका कि जिक्र माननीय सदस्य ने किया है कि जब महाराजाधिराज से बात हुई तो उन्होंने उसकी बात करना पसन्द नहीं किया लेकिन मेरा ऐसा ख्याल नहीं है । उनसे बहुत सी चीजों पर बातें हुई और मैं उन सब बातों का विवरण यहां देने में मजबूर हूं । लेकिन उन्होंने कुछ ऐसा मुझ को जाहिर नहीं किया कि वह इन बातों को नहीं करना चाहते हैं बल्कि उन्होंने मुझको फिर दावत दी कि मैं वहां जाऊँ और उनसे और बातें करूँ । माननीय सदस्य उनको छपाने की कोशिश में हैं यह मैं जानता हूं लेकिन उससे उनका कोई फायदा होने वाला नहीं है ।

दूसरी बात जो उन्होंने यू एन आई की कही तो मैं देखता हूं कि उनका बहुत निकट का सम्बन्ध है इन पत्रकार से जिनके बारे में वह ऐसा जिक्र कर रहे हैं ।

लेकिन शायद उस पत्रकार ने उनसे यह नहीं कहा कि मैं ने खुद उस पत्रकार से कहा था कि तुम बड़ी पुरानी खबर लाये हो । पंडितजी ने इस के पहले भी कह रक्खा है कि नेपाल के ऊपर जब कोई हमला होगा तो भारत मदद करेगा । इस लिये...

श्री कँवरलाल गुप्त : उन्होंने इस खबर पर अपना कमेंट दिया या नहीं ? वह इस लिये रिलीज नहीं हो पाया कि कम्यूनिकेशन खराब था । उनको अगले दिन पता लगा ।

श्री दिनेश सिंह : मैं क्या जानूं कि क्यों नहीं रिलीज हो पाया । पत्रकार शायद माननीय सदस्य के बहुत निकट हैं और उन्होंने उनको बतलाया होगा कि क्यों रिलीज नहीं हो पाया, मुझसे तो बतलाया नहीं कि क्यों रिलीज नहीं हो पाया । उन्होंने जब मुझसे कहा तो मैं ने उनसे कहा कि बड़ी पुरानी खबर लिये हुए हो । इसमें कितना सच है मैं नहीं कह सकता, लेकिन जहां तक नेपाल का सम्बन्ध है, पहले ही प्रधान मंत्री कह चुके हैं कि नेपाल के ऊपर कोई आक्रमण होगा तो हम उनकी मदद करेंगे । इस पर कोई नई बात कहने की जरूरत नहीं है ।

जहां तक माननीय सदस्य ने गोरखों के बारे में सवाल पूछा कि चीन गोरखों को अपनी फ़ौज में लेना चाहता है, इसके सम्बन्ध में चीन से नेपाल की क्या बात हो रही है मैं नहीं कह सकता ।

जहां तक उन्होंने यह जिक्र किया कि कुछ ऐसे देश हैं जो कि हमारे और नेपाल के सम्बन्धों को बिगाड़ना चाहते हैं, इस वक्त उनके नाम लेने से क्या फायदा ? एक दो की बात तो यहां हो ही गई है । उनके साथी उनके बगल में बैठे हैं, उन्होंने ही इसकी बात की । इसके ज्यादा गहराई में जाने से क्या फायदा ?

श्री स० मो० बनर्जी (कानपुर): मैं जानता हूं कि हमारे और नेपाल के सम्बन्ध काफ़ी पुराने हैं और हम लोग चाहते हैं कि दोनों देशों के बीच मित्रता बनी रहे, चाहे सांस्कृतिक हो या राजनीतिक या कोई और । लेकिन हमारे सामने सवाल यह है कि जब श्री दिनेश सिंह वहां गये और यह भी वह समझते हैं कि वाकई जो उनकी माँग है कि वहां पर यहां के आदमी नहीं रहने चाहिये वह सही है तो उसको वहीं मान लिया जाना अच्छा होता क्योंकि वहां के फारेन सेक्रेट्री जब यहां तशरीफ लाये तब उन्होंने विज्ञप्ति निकाली । साफ तरीके से उन्होंने कहा कि हम लोग नहीं चाहते हैं कि यहां के लोग वहां रहें मैं चाहता हूं कि हिन्दुस्तान की सरकार इस डिमान्ड को पहले से मान लेती ।

लेकिन इसके साथ दूसरी चीजें भी हैं । नेपाल के कुछ लोग कोशिश कर रहे हैं कि हमारे देश के कुछ लोगों को ब्लैक मेल करें, हमारी सरकार को ब्लैक मेल करें । कुछ ही लोग ऐसे हैं,

आम तरीके से तो अच्छे लोग हैं। मैं जानना चाहता हूं कि कौन सी ऐसी चीजें वहां पर हुई जिनसे दोनों देशों के बीच में काफी इरिटेशन हो रहा है, और उनको रिमूव करने के लिये क्या हो रहा है ? कोसी प्रोजेक्ट के बारे में जो बातें चल रहीं हैं उन से भी सम्बन्ध खराब होते जा रहे हैं। मैं जानना चाहता हूं कि क्या इसके बारे में कोई बातचीत हुई, और हुई तो सरकार ने क्या फैसला किया ?

श्री दिनेश सिंह : हमने वहां क्या बात मानी और क्या नहीं मानी, इस के बारे में पता नहीं माननीय सदस्य क्यों समझते हैं कि यह बात नहीं मानी गई। लेकिन इसके बारे में वहां जो बातें हुई उसके सम्बन्ध में मैं इस वक्त कुछ नहीं कहना चाहता हूं, सिवा इसके जो ज्वायेंट कम्यूनिके में छपा हुआ है और ज्वायेंट कम्यूनिके के आधार पर आगे जो कुछ करने की बात है। उसके अलावा मैं ने अपने स्टेटमेंट में कहा कि नेपाल को हमने बतलाया है कि इसके प्रिंसिपल को मानने में कोई कठिनाई नहीं है तब माननीय सदस्य क्यों समझते हैं कि ऐसी बात वहां हमने नहीं कही ? यह बात तो पहले से उन्हें मालूम है।

जहां तक में सुन सका, माननीय सदस्य ने पूछा कि नेपाल के साथ सम्बन्धों को मजबूत करने के लिये हम क्या कर रहे हैं।

SHRI M. L. SONDHI : He will write his memoirs after his resignation.

श्री नाथपाई (राजापुर): क्या क्या रुकावटें हैं ?

श्री दिनेश सिंह : यह कहना बहुत मुश्किल है कि क्या क्या रुकावटें हैं।

SHRI M. L. SONDHI : Our Ambassador is the biggest obstacle. He should be recalled. He has proved a complete failure.

श्री दिनेश सिंह : मैं नहीं समझता कि यह मुनासिब है कि जब हमारा एक राजदूत किसी देश में हमारी तरफ से काम कर रहा हो तब यहां पर हम यह कहें कि वह रुकावट है।

SHRI HEM BARUA (Mangaldai) : What is the harm in withdrawing him ?

SHRI M. L. SONDHI : He is destroying the historic friendship between India and Nepal. I had warned the hon. Minister during the last session.....

श्री दिनेश सिंह : माननीय सदस्य ऐसी बात कह कर रुकावट पैदा कर रहे हैं।

MR. DEPUTY-SPEAKER : This is not the way to interrupt.

SHRI M. L. SONDHI : Then, what is the way ? Does he want Nepal also to go the same way as NEFA and LADAKH ? He travels round the world, but he is not concerned about Nepal. We shall not allow this to happen. If a person is incompetent, then this House has the sovereign right to demand his recall.

MR. DEPUTY-SPEAKER : This interruption is absolutely uncalled for.

SHRI M. L. SONDHI : Sir, you are yourself a scholar of foreign affairs and you should know it yourself.

MR. DEPUTY-SPEAKER : May I request hon. Members now to observe some order ? Otherwise, it would be very difficult for hon. Members to listen to the reply of the hon. Minister.

SHRI HEM BARUA : Sir, you made an appeal to us to observe some order. But then the hon. Member opposite is making some unintelligent interruptions and thereby he is disturbing the proceedings of the House ?

श्री स० मो० बनर्जी: आखिर हम लोग वहां पर गये या नहीं, हमने सिद्धान्त मान लिया है या नहीं माना है, आखिर हम किस नतीजे पर पहुंचे ? जहां तक मानने का सवाल है, मैं जानता हूं कि हमको यह कहना पड़ेगा कि मानो न मानो तुम्हारी मर्जी। लेकिन कोई चीज साफ होनी चाहिये। जिस को सिद्धान्त के तौर

[श्री स० मो० बनर्जी]

पर मान लिया । अगर वहीं मान लेते तो रिश्ते खराब न होते ।

श्री दिनेश सिंह : ऐसी बात नहीं है ।

श्री बेणी शंकर शर्मा (बांका) : अभी हमारे मित्रों ने जो प्रश्न किये और मंत्री महोदय ने जो जवाब दिये उनसे मुझे एक शायर का वह शेर याद आ जाता है जिसमें उसने गत महायुद्ध के दौरान कहा था :

"कदम जर्मन के बढ़ते हैं, फतह इंग्लिश की होती है ।"

आज हमारे यहां नेपाल के साथ ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक सम्बन्धों के सुधार की चर्चायें तो बहुत की जा रही हैं । किन्तु आज हम देख रहे हैं कि हर एक वी० आई० पी० के नेपाल जाने के बाद भारत और नेपाल के सम्बन्ध बदतर ही होते जा रहे हैं । मैं मंत्री महोदय का ध्यान अपने द्वारा 11 दिसम्बर, 1968 को दिये हुए एक काल अटेंशन की तरफ आकर्षित करना चाहता हूं । उसके पहले नवम्बर मास में हमारे स्वर्गीय राष्ट्रपति, डा० जाकिर हुसैन साहब वहां गये थे और उसके बाद श्री बली राम भगत भी गये थे । ठीक उसके बाद ही सुस्ता काण्ड हुआ था जिस ने यहां के लोगों को हिला दिया था । उस वक्त भी मेरे प्रश्न के जवाब में यही कहा गया था कि हमारे सम्बन्ध हैं और अच्छे होते जा रहे हैं । अभी श्री दिनेश सिंह जी वहां हो आये हैं । उनके बयान से तो ऐसा मालूम हुआ था कि वे एक बहुत बड़ा काम करके आये हैं, बड़ा भारी शिकार करके आये हैं, किन्तु जब वहां के पत्रों को देखते हैं तो मालूम पड़ता है.....

MR. DEPUTY-SPEAKER : I may point out that the question must relate to the subject-matter of the main notice which relates only to military mission.

श्री बेणी शंकर शर्मा : मैं मंत्री महोदय से केवल यही पूछना चाहता हूं कि नेपाल में उन्होंने जो चर्चा की उसके दौरान 1950 की नेपाल मैत्री संधि के सम्बन्ध में तथा 1965 में भारत और नेपाल के बीच में नेपाल में शस्त्रास्त्रों के आयात के सम्बन्ध में जो ऐग्रीमेंट हुआ था उसके बारे में भी कुछ बातें हुई या नहीं ?

दूसरी बात यह कि नेपाल के वर्तमान प्रधान मंत्री की शिकायत यह है कि जहां उन्होंने कोसी और गंडक योजनायें बनाने में भारत सरकार को हर तरह से सहायता दी वहां करनाली हाइडेल प्रोजेक्ट में भारत ने नेपाल का कोई हाथ नहीं बटाया । मैं जानना चाहता हूं कि इसके बारे में उनके बीच कोई चर्चा हुई थी या नहीं, और हुई थी तो क्या परिणाम निकला ?

श्री दिनेश सिंह : जहां तक करनाली का सम्बन्ध है, करनाली आयोजन में मदद करने में हम को कोई कठिनाई नहीं है । हम अभी उस स्कीम की जांच करना चाहते हैं कि क्या वह बन सकेगी, क्या वह उनके लिये फायदेमन्द होगी, क्या वह बिजली ऐसे दामों पर बना सकेगी जिसको हम ले सकेंगे या नहीं । यह जांच हो जाने के बाद तय होगा कि उस में हम क्या मदद कर सकते हैं ।

12.29 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

Report of Industrial Licensing Policy Inquiry Committee

THE MINISTER OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT, INTERNAL TRADE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI F. A. AHMED) : I beg to lay on the Table a copy of the Report of the Industrial Licensing Policy Inquiry Committee. [*Placed in Library. See* No LT—1232/69.]

Proclamation in Relation to the State of Bihar

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI Y. B. CHAVAN): I beg to lay on the Table:

(1) (i) A copy of the Proclamation dated the 4th July, 1969 issued by the Vice-President acting as President